THE GHAT OF THE ONLY WORLD BY (Amitav Ghosh)

SUMMARY IN HINDI

ये कहानी दो दोस्त अमिताभ धोष एवं शाहिद की है। ये कहानी लेखक अमिताभ धोष की अपने दोस्त शाहिद को एक श्रद्धांजलि है।

बात 25 अप्रेल 2001 की है मैंने आगा शाहिद अली को यह याद दिलाने के लिए फोन किया कि आज हम दोनों को एक दोस्त के यहॉ लंच में जाना है और मैं उसे लेने आउंगा। शाहिद का कैंसर का इलाज चल रहा था परन्तु उसका स्वाश्थ्य अभी एकदम ठीक–ठाक था, उसने मुझे बताया कि उसको अभी कुछ खास परेशानी तो नहीं है। परन्तु किसी–किसी समय वह चीजों का भूल जाता है। उसने मुझसे पुछा कि इसका मतलब ये तो कि वह मरने वाला है।

यद्धपि आज से पहले हम उसकी बीमारी के बारे में बहुत बातें कर चुके थे परन्तु आज पहली बार उसने अपनी मौत के बारे में बात की थी। मैं समझ नहीं पा रहा था कि उसकी बात का क्या उत्तर दूं? मैंने बातों को इधर उधर मोड़ा परन्तु वह बीच में ही बोल पड़ा "जब मैं मरूगां तुम मेरे बारे में लिखना।" मैं आवाक् रह गया और समझ नहीं पाया कि क्या जबाब दूं। मैंने शाहिल से कहा कि वह एक दम ठीक हो जायेगा, परन्तु वह माना नहीं वह अपनी बातों को लेकर बहुत गम्भीर था। उसने मुझसे कहा कि मैं उससे बादा करूं कि मैं उसके मरने के बाद उसके बारे में जरूर लिखुंगा। यह एक ऐसा बादा था जो कोई भी दोस्त अपने दोस्त से नहीं करना चाहता, पर मेरे पास कोई दूसरा रास्ता नहीं था, और मैंने अन्त में कहा कि मैं जरूर लिखुंगा और मैंने फोन रख दिया। मैंने एक पैन ली और आज हम दोनों के बीच हुए बार्तालाप की हर बात लिख दी जो मुझे याद थी।

मैं शाहिद को उससे मिलने से पहले ही जानता था। मुझ पर उसकी प्रसिद्ध कविता द कन्ट्री विदआउट पोस्ट ऑफिस का गहरा प्रभाव था। शाहिद का जन्म श्रीनगर जम्मू कश्मीर में हुआ था। उसकी और मेरी शिक्षा लगभग एक ही समय में दिल्ली विश्वविद्याालय में हुयी थी, परन्तु उसकी और मेरी दिल्ली विश्व विद्यालय में कभी मुलाकात नहीं हुयी। उसके और मेरे बहुत से दोस्त कॉमन थे।

1998 और 1999 में हमने एक दूसरे से फोन पर बात भी की ओर एक दो बार हम मिले भी थे, पर हम अभी दोस्त नहीं बने थे।

हमारी जान पहचान दोस्ती में तब बदली जब शाहिद मेरे पड़ोस में रहने ब्रुकलिन आया। अब हम कभी–कभी भोजन पर मिलते थे, हमें तुरन्त ही पता चल गया की हम में बहुत सी बातें कॉमन हैं। इस समय तक शाहिल का स्वाश्थ्य बहुत खराब हो चुका था परन्तु उसकी बीमारी, हमारी दोस्ती के बीच कभी अवरोध नहीं बनी। हम दोनों को ही रोगन जोश, रोशन आरा बेगम एवं किशोर कुमार बहुत पसंद थे। हम दोनों का क्रिकेट से कोई लेना देना नहीं था परन्तु हमें मुम्बईया फिल्में बहुत पसंद आती थी। चुंकि शाहिल की हालत वहुत नाजुक थी इसलिए छोटी छोटी बातें भी बहुत पहत्व रखती थी।

एक दिन दोपहर को सुकेतु मेहता, जो कि ब्रुकलिन में रहते थे, हमारे साथ लंच पर आये जहां हमने अपने अड्डे के लिए एक प्लान बनाया। शाहिल अड्डे को लेकर काफी उत्तसाहित था। समय–समय पर अन्य लेखक भी हमारे अड्डे पर आने लगे। एक दिन एसे ही किसी अवसर पर कैमरा और टैलीविजन वाले वहां पर आ गये। शादिह फोटो खींचाने के बिल्कुल मूड में नहीं था पर मुझे फोटो खींचाना बहुत पसंद था।

शाहिद के पास अरूचिकर को रूचिकर में बदलने की जादुई योग्यता थी। 21 मई की बात है शाहिद का भाई इकबाल, बहन हिना और मैं शाहिद को अस्पताल से लेने गये जहॉ कि उसका ऑपरेशन हुआ था। उसका सिर मुंड़वाया गया था ओर उसकी नंगी खोपड़ी पर ट्यूमर दिखाई दे रहा था। ब्हील चेयर लेकर हास्पिटल का गार्ड आया तो शाहिद ने उसे यह कह कर भगा दिया कि वह खुद अपने पैरों पर चलकर जायेगा। जब शाहिद खुद चलने लगा तो वह चल नहीं पाया और अपने धुटनों पर झुक गया। हमने उसे सहारा देकर खड़ा किया तो वह हास्पिटल की दीवार पर ऐसे झुक कर खड़ा था मानो उसे परम आनन्द की प्राप्ति हो रही हो। जब दुबारा ब्हील चेयर लेकर हास्पिटल का गार्ड आया तो शाहिद ने उससे पूछा कि वह कहॉ का रहने वाला है? जब गार्ड ने उसे बताया कि वह इक्वेडोर का रहने वाला है तो शाहिद ने जोर से ताली बजाई और मुस्कुराते हुए कहा कि वह हमेशा स्पेनिश सीखना चाहता था ताकि लोर्का को पढ़ सके।

शाहिद की मिलनसारिता की कोई सीमा नहीं थी। कभी भी कोई ऐसी शाम नहीं होती थी जब कि उसके बैठक में पार्टी न हो रही हो। वह कहता था कि उसे पार्टी करना या उत्सव मनाना बहुत पसंद है। शाहिद खाना बनाने की कला में प्रसिद्ध था । वह एक डिनर पार्टी की तैयारी में कई दिन लगा देता था वह सूंध कर बता देता था कि कब खाने में दही मिलानी है व रोगन जोश तैयार हुआ या नहीं। वह अपने देश के खाने के प्रति दीवाना था खाश कर के पंडितों की शैली में कश्मीरी भोजन का। उसके बैठक में हमेशा आधा दर्जन या उससे अधिक लोग इकट्ठे रहते थे। यद्यपि उसका जीवन बीमारी के द्वारा समाप्त किया जा रहा था फिर भी वह हमेसा कभी न समाप्त होने वाले मेले का केन्द्र विन्दु रहता था। उसके कमरे में हमेसा कभी न समाप्त होने वाली बातों का मेला, हॅसी का मेला, खाने का मेला ओर बेशक कविता को मेला लगा रहता था।

जेम्स मैरिल वह कवि था जिसने शाहिद की कविता की दिशा ही बदल दी। शाहिद की कविता पर किसी भी ब्यक्ति का उतना प्रभाव नहीं था जितना कि जेम्स मैरिल का। शाहिद महान गजल गायिका बेगम अख्तर के संगीत का दीवाना था और उनकी हाजिर जवाबी से काफी प्रभावित था। शाहिद खुद भी काफी हाजिर जवाब था। एक बार बारर्सिलोना हवाई अड्डे पर एक महिला सुरक्षाकर्मी ने उससे पूछा कि क्या वह अपने साथ कोई ऐसी चीज तो नहीं ले जा रहा जो अन्य लोगों के लिए खतरनाक हो सकती है। शाहिद ने अपनी छाती पर हाथ रखा और चिल्लाया " केवल अपना दिल "

शाहिद एक विलक्षण अध्यापक था। उसके छात्र उसे पूजते थे। उन्होंने एक पत्रिका छपवायी और उसके एक अंक को शाहिद को समर्पित किया था। उसने अनेक कालजों और अनेक यूनीवर्सिटियों में अनेक नौकरियां की। उसे 1999 में साल्ट लेक सिटी की उटाह यूनीवर्सिटी में प्रोफेसर नियुक्त किया गया।

कश्मीर में हिंसा और प्रतिहिंसा का उस पर जबर्दस्त प्रभाव पड़ा। उसने 1989 में लिखा : "कश्मीर शीध्र ही सचमुच लपटों में होगा" यद्धपि वह एक राजनैतिक कवि नहीं था, परन्तु कश्मीर उसके लेखन का केन्द्रीय विषय बन गया।वह कहता था की वह कश्मीर के भाग्य का शाहिद (गवाह) और शहीद दोनों था। वह कश्मीर के भाग्य पर बहुत दुखी था। वह विचारों से धर्म निरपेक्ष था। वह धर्म और राजनीति को अलग अलग नजरिये से देखता था। वह अपने धर्म निरपेक्ष विचारों के लिए अपनी मॉ को श्रेय देता था। वह वचपन में अपने धर में हिन्दू

मन्दिर बनाना चाहता था जिसमें उसकी मॉ ने उसकी सहायता की। उसकी मॉ उसके लिए मूत्रियां व अन्य सामग्री लायी।

6 मई को उसका हास्पिटल में एक टैस्ट होना था जिसमें इस बात का पता लगना था कि जो कीमोथैरपी उसकी की जा रही थी क्या उसका फायदा हो रहा है या नहीं। मैंने उसे कई फोन किये पर उसने फोन उठाया नहीं।फिर मैंने उसे दूसरे दिन प्रातः फोन किया तो उसने मुझे बताया कि खबर अच्छी नहीं है डाक्टरों ने उसे बताया है कि उसके पास एक साल या उससे कम समय है। मैं भौचक्का रह गया और मैंने उससे पूछा कि अव वह क्या करेगा तो उसने विना परेशानी के उत्तर दिया कि वह कश्मीर में मरना चाहता है। परन्तु कुछ कानूनी और अन्य कारणों से ऐसा हो नही पाया। मेरी शाहिद से अन्तिम मुलाकात 27 अक्टुबर को उसके भाई के धर में एमहर्स्ट में हुई, वह रूक रूक कर बातें कर रहा था। उसे अपनी आने वाली मृत्यु का एहसास हो चुका था। उसने मुझसे एक बार कहा था यदि मृत्यु के बाद भी जीवन होता है तो उस जीवन में वह अपनी मॉ से मिलना चाहता है। उसकी मृत्यु 8 दिसम्बर को रात्रि 2 बजे हुई, जबकि वह सोया हुआ था।

आज उसकी अनुपस्थिति में मैं आश्चर्य चकित होता हूॅ कि इतने कम समय कि दोस्ती भी इतनी बड़ी रिक्तता पैदा कर सकती है। आज भी मुझे अपने बैठक में उसकी उपस्थित महसूश होती है।

Important Points:

1. Shahid talked to the narrator about his approaching death on 25 April, 2001.
2. He has been under treatment of cancer for about 14 months.
3. The narrator consoled him that he would be fine soon.
4. Shahid wanted the narrator to write something about him. The narrator promised to do so.
5. The narrator had already read Shahid's 'The Country Without a post office'. 6. His illness didn't impede the progress of their friendship.
7. Both of them loved Rogan josh, Roshanara Begum and Kishore Kumar. They also liked old Bombay films and were indifferent to cricket.
8. Although critically ill, Shahid was full of life.
9. He sent the hospital escort away when he tried to help him.
10. Shahid was very social and fond of parties and food.
11. There was always 'an endless mela of talk, laughter, food, and, of course, poetry' at his house.
12. Shahid was famous for his skill in the kitchen. He could tell from its smell if rogan

josh was ready or not. He had a passion for the Kashmiri food.
13. Shahid was sharp in repartee.
14. Shahid was a brilliant teacher. He taught at many colleges and universities in the U.S.A.
15. Shahid hated violence and the counter-violence in Kashmir. Kashmir was the central theme of his poetry.
16. He was secular and believed in the separation of politics and religion.
17. He expressed his wish 'to go back to Kashmir to die' but was laid to rest in Northampton.

Questions and Answers

Q1. What impression of Shahid do you gather from the piece?

Ans. Shahid Ali was multifaceted personality and appears to be sensitive soul. He was born is Shrinagar and had studied in Delhi. Latter, he migrated to America and served in various colleges and universities. Shahid was fine scholar and brilliant teacher. His students loved and respected him. Shahid was profound lover of good poetry, music, clothes, and food. He always thought of Kashimir and was hurt by the mounting violence in the valley. Though he was not a political poet, his finest work relates to writing about Kashmir. He never lost the courage in the face of misfortune. Even dreadful disease of cancer could not break his sprit. He refused to take the help of wheel chair in the hospital.

Q2. How do Shahid and the writer react to the knowledge that shahid is going to die?

Ans. "Oh dear! I can't see a thing……. I hope this doesn't mean that I am dying" The fear of death was very vividly visible in Shahid tone of voice and use of words. He got scared when he felt for the first time that he was dying. When his occasional memory lapses became more serious with passage of time, the realization of death drawing nearer become stronger. When he was in a conversation with Amitav Ghosh he said in a clear ringing voice- "When it happens, I hope you will write something for me." The write could think of nothing to say on such a topic at last he had to promise," I will do the best, I can." From that day, the writer started keeping a record of all the conversations and meetings he had with Shahid. This record helped him to fulfil his promise.

Q3. When and where did Agha Shahid Ali first talk of his death?

Ans. Agha Shahid Ali spoke to the narrator about his approaching death on 25 April 2001. The narrator telephoned that he was coming to his apartment to pick him up. They had to go to a friend's house for lunch. Although they had talked a great deal over the last many weeks, Shahid never touched upon the subject of death.

Q4. What request did Shahid make to the narrator and what did he say to Shahid?

Ans. The narrator tried to console Shahid that he would be fine again. Shahid ignored his assurance and cut him short. He requested the narrator to write something after his death. The narrator was shocked into silence. But Shahid insisted on extracting a promise. The narrator finally promised to write something after his death.

Q5. What common interests did the narrator share with Shahid Ali.

Ans. Love for poetry and literature bound the narrator with Shahid. His work “The country Without a Post Office” made a deep impression on the narrator. They had common friends in Delhi as well as in America. Love for rogan josh, Roshanara Begam and Kishore Kumar further cemented their friendship. Both of them were found of Bombay films and had a mutual indifference of Cricket.

Q6. “ Shahid’s gregariousness had no limit” Explain?

Ans. Shahid was very social. There was never an evening when there was not a party in his living room. There were always some half dozen or more people gathered inside. They included poets, students, writers and relatives. Someone would always be cooking or making tea in the kitchen. Almost to the very end he was ‘endless mela of talk, laughter, food, and, of course, poetry.’

Q7. Give an example to show Shahid’s sharpness in repartee.

Ans. Shahid was quite witty. Once a lady security guard at Barcelona airport stopped him. She asked what he was doing in Spane. “writing poetry” he said. Finally the woman asked if he was caring anything that could be dangerous to others passengers. Shahid clapped a hand to his chest and cried; “only my heart.”

Q8. Give an example to show Aga Shahid Ali’s secular credentials.

Ans. Shahid was secular in his outlook. He remained a firm believer in the separation of religion and politics. His outlook was all inclusive. In his childhood he wanted to create a small Hindu temple in his room in Shrinagar. His mother bought him the idols and other things. He hated fanaticism.

Q9. What do you learn of the Indian diaspora from the lesson?

Ans. The word diaspora means a dispersion of an originally homogeneous entity such as language and culture. With reference to the context, Indian diaspora becomes more prominent in Ghosh’s wirting. From this text we come to know that a number of Indians have settled in different countries of the west, specially America and England. Aga Shahid his two sisters and his brother, Suketu Mehata and the writer form part of the Indian diaspora. These people,

though living in another land, never forgot about their roots. These Indian feel a sense of unity and keep meeting each other on various occasion.

Q10. Shahid had a sorcerer's ability to transmute the mundane into the magical. What incident does the author quote to explain this?

Ans. Once Amitav Ghosh happened to accompany Iqbal, Shahid's brother, and Hena, his sister, on a trip to fetch him home from hospital. By that time Shahid had already been through several unsuccessful operations. Now he was back in hospital to undergo a surgical procedure that was intended to relieve the pressure on his brain. His head was shaved and the shape of the tumour was visible upon his bare scalp, its edges outlined by metal sutures/stitches. When it was time to leave the ward a blue-uniformed hospital escort arrived with a wheelchair. Shahid waved him away, declaring that he was strong enough to walk out of the hospital on his own.

Kundan Singh Dhami
Lecturer in English
G I C Dewalthal

Sources: NCERT Books